नवभारत
भोपाल, शनिवार, 1 नवंबर 2025

सुविचार– अगर आप दूसरों के बारे में भी सोचते हैं तो आप सच्चे इंसान हैं.

कहानी

चालाक हिरण की कहानी

कई साल पहले एक घने जंगल के बीच से एक चमकती नदी बहती थी. उस नदी के एक किनारे पर एक सुंदर और चतुर हिरण रहता था, जिसका नाम था चिंटू. चिंटू अपनी चमकदार आँखों और तेज़ दिमाग के लिए जंगल में मशहूर था. लेकिन नदी के दूसरे किनारे पर एक चालाक मगरमच्छ रहता था, जिसका नाम था भयानक. भयानक हमेशा चिंटू को पकड़ने की सोचता था, क्योंकि उसे लगता था कि चिंटू का मांस बहुत स्वादिष्ट होगा.

एक दिन चिंटू नदी के किनारे घास चर रहा था. तभी उसकी नज़र नदी के दूसरी तरफ पड़ी, जहाँ लाल-लाल रसीले जामुनों का एक झाड़ दिखा. चिंटू ने ललचाई नज़रों से जामुनों को देखा और सोचा,वाह! कितने मज़ेदार जामुन हैं! काश मैं इन्हें खा पाता उसने अपने आप से कहा,लेकिन नदी पार करना आसान नहीं. अगर मैं तैरकर गया, तो भयानक मगरमच्छ मुझे पकड़ लेगा. अब मैं क्या करूँ? चिंटू सोच में डूब गया. चिंटू ने थोड़ी देर सोचा और फिर एक शानदार तरकीब सूझी. वह नदी के किनारे थोड़ा आगे बढ़ा, जहाँ भयानक मगरमच्छ धूप सेंक रहा था. चिंटू ने ज़ोर से आवाज़ लगाई,भयानक भाई, सुनो! जंगल के राजा ने आज रात एक बड़ी दावत रखी है. उन्होंने सभी मगरमच्छों को न्योता दिया है. वहाँ ढेर सारा स्वादिष्ट खाना होगा!

भयानक ने हैरानी से पूछा,सच में, चिंटू? राजा ने हमें बुलाया है? यह तो बहुत अच्छी खबर है! चिंटू ने मुस्कुराते हुए कहा,हाँ, भयानक! लेकिन राजा ने मुझसे कहा है कि पहले मैं नदी के सभी मगरमच्छों को गिन लूँ. तुम सबको छोटे से बड़े के क्रम में लाइन लगानी होगी, ताकि मैं गिनती कर सकूँ.

भयानक ने खुशी-खुशी अपने दोस्तों को बुलाया और चिल्लाया,सब मगरमच्छ यहाँ आओ! हमें राजा की दावत में जाना है. चिंटू को हमारी गिनती करनी है, जल्दी लाइन में लगो! सभी मगरमच्छ नदी में एक-दूसरे के पीछे लाइन में लग गए. चिंटू ने कहा,भयानक, मैं तुम्हारी पीठ पर चढ़कर गिनती करूँगा. तुम सब मुझ पर भरोसा कर सकते हो, मैं तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा. मगरमच्छों ने एकसाथ कहा,हमें कोई डर नहीं, चिंटू! तुम गिनती करो, हम तैयार हैं. चिंटू ने एक-एक मगरमच्छ की पीठ पर छलाँग लगाई और गिनती शुरू की,एक, दो, तीन... इस तरह वह हर मगरमच्छ की पीठ पर कूदता हुआ नदी के उस पार पहुँच गया. जैसे ही वह दूसरी तरफ पहुँचा, उसने भयानक को धन्यवाद दिया और कहा,शुक्रिया, भयानक! तुमने मेरी बहुत मदद की. अब मैं राजा को तुम्हारी गिनती बता दूँगा.

चिंटू की जीत और मगरमच्छों का गुस्सा – चिंटू तेज़ी से जामुनों की ओर दौड़ा और उन्हें खाने लगा. दूसरी तरफ, मगरमच्छों को एहसास हुआ कि चिंटू ने उन्हें बेवकूफ बनाया है. भयानक ने गुस्से में कहा,यह चिंटू बहुत चालाक है! उसने हमें धोखा दे दिया. हम तो दावत के चक्कर में उसकी बातों में आ गए! बाकी मगरमच्छ भी गुस्से में गुर्राने लगे, लेकिन अब बहुत देर हो चुकी थी. चिंटू अपनी चतुराई से अपनी जान बचाकर स्वादिष्ट जामुन खा रहा था. उसने सोचा,चतुराई से हर मुश्किल को हल किया जा सकता है.

सीख – बच्चों, इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि चतुराई और समझदारी से हर मुश्किल को हल किया जा सकता है. चिंटू ने अपनी बुद्धि का इस्तेमाल करके नदी पार की और अपनी जान बचाई. हमें भी मुश्किल हालात में शांत रहकर अपने दिमाग का सही इस्तेमाल करना चाहिए. चतुराई हमें मुसीबतों से बचाने के साथ-साथ हमारे सपनों को पूरा करने में भी मदद करती है. हमेशा सोच-समझकर फैसले लो और हिम्मत कभी मत हारो.

अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूंढकर निकालें.

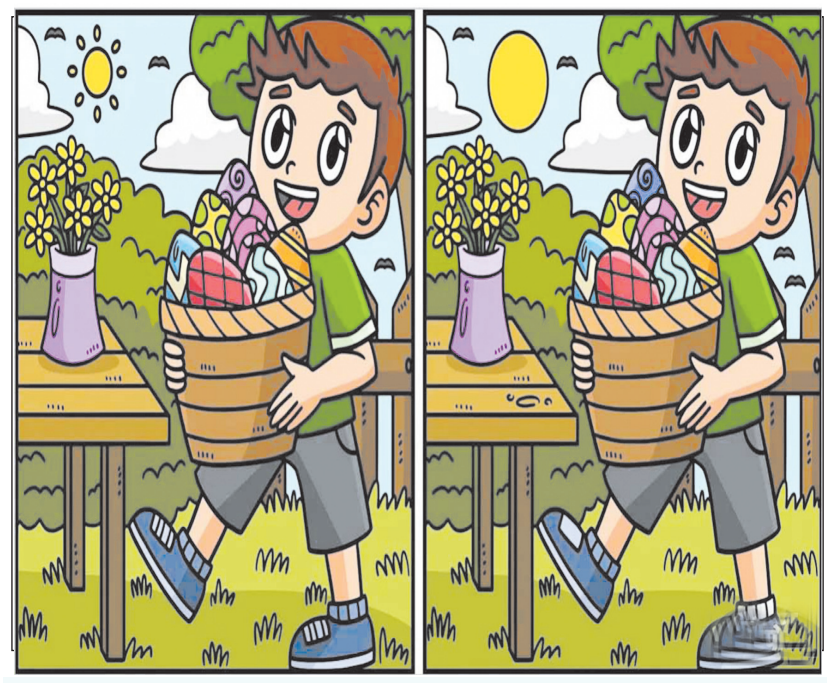

उत्तर– 1. सूरज में अंतर 2. लड़के के जूते में अंतर 3. टेबिल की डिजाइन 4. लड़के के पीछे पक्षी की संख्या में अंतर 5.

जानकारी

यशवंत सिन्हा ने वित्त मंत्री के रूप में भारत की अर्थव्यवस्था को दी मजबूती

यशवंत सिन्हा: एक परिचय

यशवंत सिन्हा भारत के एक महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं जो देश के लिए निर्णय लेने में मदद करते हैं. उनका जन्म 6 नवंबर, 1937 को पटना नामक स्थान पर हुआ था, जो बिहार में है. लोगों को लगता है कि वे एक अच्छे नेता हैं और पैसे और अर्थशास्त्र के बारे में बहुत कुछ जानते हैं. उन्होंने कई महत्वपूर्ण काम किए हैं, जिनमें वित्त मंत्री और विदेश मंत्री के रूप में सेवा शामिल है.

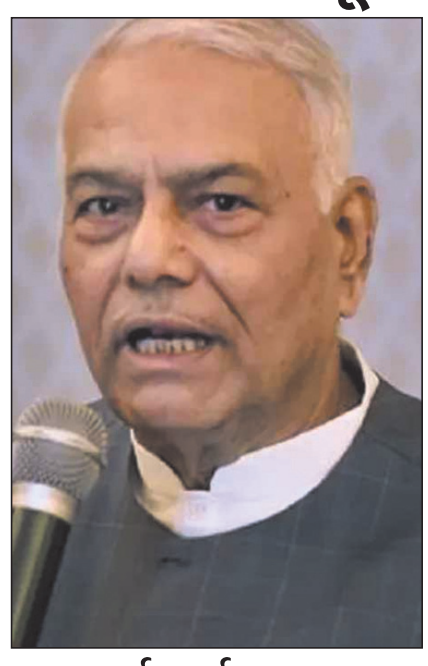

शिक्षा और प्रारंभिक जीवन

यशवंत सिन्हा की शिक्षा-दीक्षा पटना में हुई, जहां उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा पूरी की. इसके बाद उन्होंने पटना विश्वविद्यालय से स्नातक की पढ़ाई की. उन्होंने राजनीति विज्ञान और इतिहास में गहन अध्ययन किया, जो उनकी राजनैतिक समझ को निखारने में सहायक साबित हुआ.

परिवार का परिचय

यशवंत सिन्हा का परिवार राजनीति और शिक्षा में रुचि रखता है. उनकी पत्नी नीलिमा सिन्हा एक शिक्षिका रह चुकी हैं. उनके दो बेटे और एक बेटी हैं. उनके बेटे जयंत सिन्हा भी एक राजनेता हैं, जिन्होंने भारतीय जनता पार्टी के साथ जुड़कर केंद्र सरकार में सेवा की है. यशवंत सिन्हा का परिवार शिक्षित और सामाजिक रूप से सक्रिय है, और उनके बच्चे भी समाज की सेवा में रुचि रखते हैं.

राजनीति में करियर

यशवंत सिन्हा का राजनीतिक करियर कई वर्षों का है. उन्होंने भारतीय प्रशासनिक सेवा में काम किया और 1984 में राजनीति में प्रवेश किया. उन्होंने सबसे पहले जनता पार्टी से शुरुआत की और फिर भारतीय जनता पार्टी में शामिल हुए. यशवंत सिन्हा को अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में वित्त मंत्री और विदेश मंत्री के रूप में सेवा करने का अवसर मिला. वित्त मंत्री के रूप में उन्होंने कई सुधार किए, जिससे भारत की अर्थव्यवस्था को मजबूती मिली. विदेश मंत्री के रूप में उन्होंने देश को विश्व स्तर पर नई पहचान दिलाने में योगदान दिया.

महत्वपूर्ण कार्य

आर्थिक सुधार

वित्त मंत्री रहते हुए, उन्होंने कई आर्थिक सुधार किए जिनका उद्देश्य भारतीय अर्थव्यवस्था को गति देना था. उन्होंने कर प्रणाली को सरल बनाने और निवेशकों के लिए अनुकूल वातावरण बनाने का काम किया.

विदेश नीति में योगदान

विदेश मंत्री के रूप में यशवंत सिन्हा ने भारत की विदेश नीति को मजबूत किया और कई महत्वपूर्ण द्विपक्षीय समझौतों पर हस्ताक्षर किए.

लेखन

यशवंत सिन्हा ने राजनीति और अर्थशास्त्र पर कई लेख लिखे हैं और उनकी पुस्तकें भी प्रकाशित हुई हैं, जो उनकी सोच और विचारधारा को प्रदर्शित करती हैं.

रुचियाँ और पसंद

यशवंत सिन्हा की रुचि राजनीति, लेखन और समाज सेवा में रही है. वे भारतीय राजनीति के एक विचारशील नेता माने जाते हैं. उन्हें नई-नई नीतियों का अध्ययन और अर्थशास्त्र में गहरी रुचि है. उनके विचार और लेखन ने युवा नेताओं को प्रेरित किया.

कुछ रोचक तथ्य डायनासोर के बारे में

डायनासोर एक समय धरती के सबसे विशाल और रहस्यमयी जीव थे. उनकी दुनिया आज भी हमें आश्चर्यचकित करती है. बच्चे, क्या आप जानते हैं कि ये दिग्गज जीव कितने अनोखे थे और उनके बारे में कितने अद्भुत तथ्य मौजूद हैं?

डायनासोर का अर्थ– डायनासोर नाम का मतलब भयानक छिपकली है. यह नाम पहली बार 1842 में वैज्ञानिक रिचर्ड ओवेन ने दिया था.

सबसे बड़ा डायनासोर– आर्जेन्टिनोसॉरस अब तक का सबसे बड़ा डायनासोर था, जिसकी लंबाई 100 फीट तक और वजन 77 टन से ज्यादा हो सकता था.

सबसे छोटा डायनासोर– कॉम्पसोग्नैथस नाम का डायनासोर मुर्गी जितना छोटा था और इसका वजन मात्र 3 किलो था.

डायनासोर की संख्या– अब तक वैज्ञानिकों ने डायनासोर की लगभग 700 प्रजातियां खोजी हैं. हर साल नई प्रजातियां भी खोजी जाती हैं.

पंख वाले डायनासोर

कई डायनासोर के शरीर पर पंख भी होते थे. माना जाता है कि आज के पक्षी उन्हीं डायनासोर के वंशज हैं.

टायरानोसॉरस रेक्स का जबड़ा– T-Rex के जबड़े में इतनी ताकत होती थी कि वह एक कार के आकार के किसी जीव को एक ही बार में तोड़ सकता था.

डायनासोर का रंग– डायनासोर के रंग का कोई पक्का प्रमाण नहीं है, लेकिन वैज्ञानिक मानते हैं कि वे हरे, भूरे और पीले रंग के होते थे.

अंडे देने वाले डायनासोर– डायनासोर अंडे देते थे. इनके अंडे आकार में बहुत बड़े होते थे, कुछ तो फुटबॉल के बराबर थे.

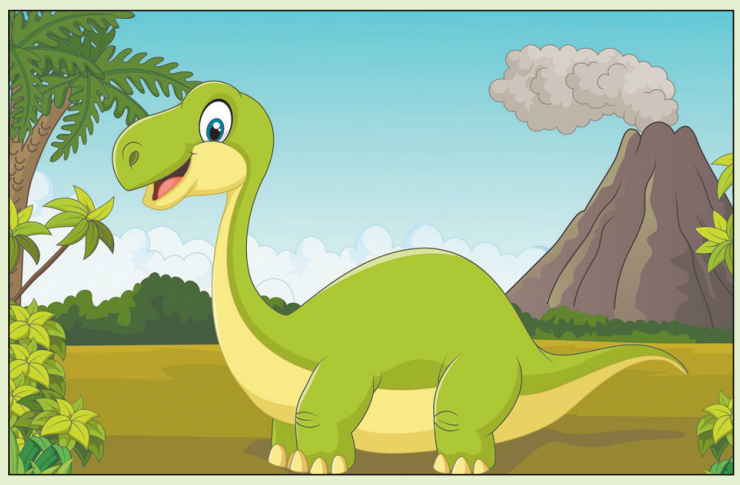

डायनासोर और उल्का

आज से 6.5 करोड़ साल पहले एक विशाल उल्का पिंड के कारण डायनासोर विलुप्त हो गए.

डायनासोर की रफ्तार– कुछ डायनासोर जैसे वेलोसिरैप्टर 60 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से दौड़ सकते थे.

भूल भुलैया

नर बुलबुल ही गाता है गाना

बुलबुल, शाखाशायी गण के पिकनोनॉटिडी कुल का पक्षी है. ये कीड़े-मकोड़े और फल फूल खानेवाले पक्षी होते हैं. ये पक्षी अपनी मीठी बोली के लिए नहीं, बल्कि लड़ने की आदत के कारण शौकीनों द्वारा पाले जाते रहे हैं. यह उल्लेखनीय है कि केवल नर बुलबुल ही गाता है, मादा बुलबुल नहीं गा पाती है.

बुलबुल कलछौंह भूरे मटमैले या गंदे पीले और हरे रंग के होते हैं और अपने पतले शरीर, लंबी दुम और उठी हुई चोटी के कारण बड़ी सरलता से पहचान लिए जाते हैं. विश्व भर में बुलबुल की कुल 9700 प्रजातियां पायी जाती हैं. इनकी कई जातियाँ भारत में पायी जाती हैं, जिनमें गुलदुम बुलबुल सबसे प्रसिद्ध है. इसे लोग लड़ाने के लिए पालते हैं और पिंजड़े में नहीं, बल्कि लोहे के एक (अंग्रेज़ी अक्षर -टी) आकार के चक्कस पर बिठाए रहते हैं. इनके पेट में एक पेटी बाँध दी जाती है, जो एक लंबी डोरी के सहारे चक्कस में बँधी रहती है.

कई वनीय प्रजातियों को ग्रीनबुल भी कहा जाता है. इनके कुल मुख्यत: अफ्रीका के अधिकांश भाग तथा मध्य पूर्व, उष्णकटिबंधीय एशिया से इंडोनेशिया और उत्तर में जापान तक पाये जाते हैं. कुछ अलग-थल प्रजातियाँ हिंद महासागर के उष्णकटिबंधीय द्वीपों पर मिलती हैं. इसकी लगभग 130 प्रजातियाँ, 24 जेनेरा में बँटी हुई मिलती हैं. कुछ प्रजातियाँ अधिकांश आवासों में मिलती हैं. लगभग सभी अफ्रीकी प्रजातियाँ वर्षावनों में मिलती हैं. ये विशेष प्रजातियाँ एशिया में नगण्य हैं. यहाँ के बुलबुल खुले स्थानों में रहना पसन्द करते हैं. यूरोप में बुलबुल की एकमात्र प्रजाति साइक्लेड्स में मिलती है, जिसके ऊपर एक पीला धब्बा होता है, जबकि अन्य प्रजातियों में स्नफ़ी भूरा होता है.

बूझो तो जानें

- आप ऐसी कौन सी चीज तोड़ सकते हैं, जिसे आप कभी उठाएं या छुएं नहीं?
  उत्तर-एक वादा.
- आपका क्या नाम है लेकिन अधिकतर दूसरे लोग इसका इस्तेमाल करते हैं?
  उत्तर- आपका नाम.
- किस प्रश्न का उत्तर आप कभी भी हाँ में नहीं दे सकते?
  उत्तर-क्या आप सो रहे हैं?
- ऐसा कौन सा शेर है जो कभी दहाड़ता नहीं?
  उत्तर- डेंडिलियन.
- वह कौन सी चीज़ है जिसके पास हज़ार सुइयाँ हैं लेकिन वह सिलाई नहीं कर सकती?
  उत्तर- साही.
- मेरे बिना थैंक्सगिविंग और क्रिसमस अधूरे हैं, जब मैं टेबल पर होता हूँ तो हर कोई ज़्यादा खाना खा लेता है. मैं क्या हूँ?
  उत्तर- टर्की.

हंसी-ठिठोली

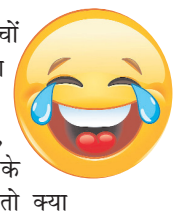

- मास्टर जी कक्षा में बच्चों को बम से बचने का तरीका सिखा रहे थे.
  मास्टर जी - बच्चों, बताओ अगर स्कूल के सामने बम रखा है, तो क्या करेंगे?
  चिंटू - एकात घंटे देखेंगे, फिर.
  मास्टर जी - फिर क्या?
  चिंटू - फिर कोई ले जाता है तो ठीक है, नहीं तो उसे स्टाफ रूम में रख देंगे.
- चिंटू - भैयाजी 10 समोसे देना.
  समोसे वाला - पैक करके देना है?
  चिंटू - नहीं, मैं पेन ड्राइव लाया हूं. उसमें समोसे नाम का फोल्डर बनाओ और डाल दो.
- मास्टर जी - कौन-सा पक्षी है, जो पंख होने पर भी नहीं उड़ सकता है?
  चिंटू - मास्टर जी मरा हुआ पक्षी.

बच्चों अपनी कहानियां, कविताएं, पेंटिंग्स, लेख, रचनाएं आदि bhopalnav@gmail.com **पर मेल करें.**

बिंदु मिलाओ

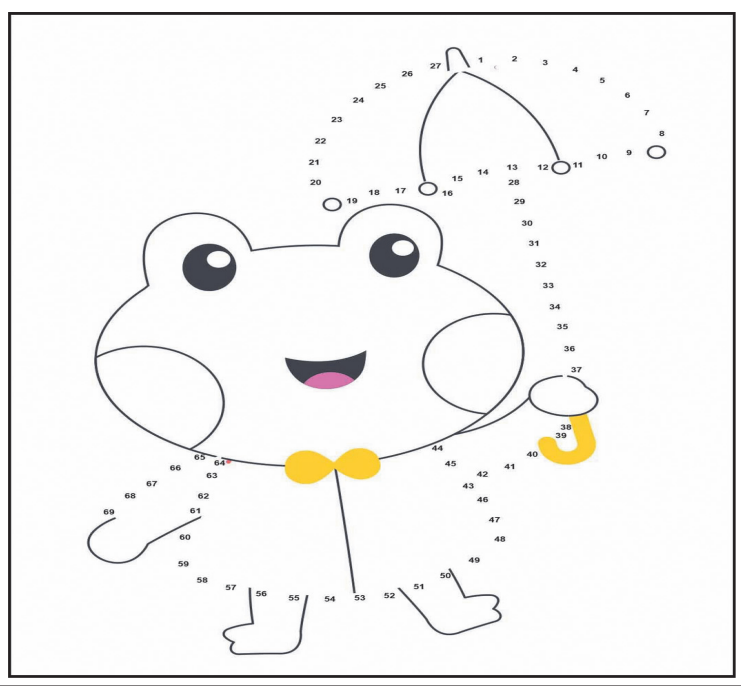

रंग भरो